Dr.Sunita Kumari, Guest Asst Prof,
Dept of H.Sc.
SNSRKS College, Saharsa
Study Material-BA Part-II (H)

Dt 07/02/2022

गृह प्रबन्ध का अर्थ
(Meaning of Home Management)

गृह प्रबन्धन पारिवारिक जीवन का प्रशासनात्मक और गत्यात्मक पक्ष है जो वैज्ञानिक आधार पर गृहिणी को अपने परिवार के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विस्तृत दिशानिर्देश प्रदान करता है।

गृह (Home)

गृह प्रबन्ध दो शब्दों से मिलकर बना है- गृह (Home) तथा प्रबन्ध (Management). गृह शब्द के समान अर्थ में ही प्रायः मकान (House) शब्द को ले लिया जाता है, किन्तु दोनों ही शब्दों में पर्याप्त भिन्नता है। मकान (House) का अर्थ उस आश्रय स्थल से होता है जो कि ईंट, पत्थर व सिमेंट आदि से बनाया जाता है। जबकि घर (Home) एक भावनात्मक शब्द है, जहाँ परिवार के सभी सदस्य स्नेह व सहानुभूति से रहकर अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। एक कहावत है कि— "A house is built by hands, but a home is built by hearts." अर्थात मकान हाथों द्वारा बनाया जाता है जबकि गृह हृदय से बनाया जाता है।

हम जानते हैं कि प्रबन्ध उस कला को कहते हैं जिसके माध्यम से किसी संस्थान के सदस्यों के कार्यों, गतिविधियों तथा उपलब्ध साधनों को नियंत्रित किया जाता है।

गृह प्रबन्ध के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि परिवार के पास उपलब्ध साधनों का उपयोग करते हुए घर कि व्यवस्था सम्भालना ही गृह प्रबन्ध है।

गृह प्रबन्ध की परिभाषा
(Definition of Home-Management)

यद्यपि गृह प्रबन्ध प्रचलित रूप से उपयोग में लाया जाने वाला शब्द है और प्रत्येक व्यक्ति सामान्य रूप में जानते है कि इसका अर्थ क्या है, किन्तु इसको विशिष्ट रूप से परिभाषित करना आवश्यक होता है ताकि गृह प्रबन्ध के बारे में गहराई से अध्ययन किया जा सके।

गृह प्रबन्ध को परिभाषित करना अपेक्षाकृत कठिन होता है क्योंकि यह एक भावनात्मक पहलू है, फिर भी कई विद्वानों ने भिन्न-भिन्न तरीके से परिभाषित किया है।

(1) ग्रास एवं क्रेन्डल (Gross & crandall) के अनुसार:—
सरल एवं संक्षिप्त अर्थों में जो हमारे पास है उपलब्ध है उसका प्रयोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करना ही गृह प्रबन्ध (व्यवस्था) है।

उपरोक्त परिभाषा में जो कुछ उपलब्ध है, से तात्पर्य परिवार के पास उपलब्ध मानवीय एवं अमानवीय साधनों (जैसे— समय, ऊर्जा, मुद्रा, भौतिक साधन, ज्ञान, रुचियाँ, योग्यताएँ, कला, और सार्वजनिक सुविधाएँ आदि) से है, तथा जो कुछ हम प्राप्त करना चाहते हैं से तात्पर्य परिवार के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक लक्ष्यों से है। अतः दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि उपलब्ध साधनों का उपयोग करके लक्ष्यों की प्राप्ति करने की प्रक्रिया ही गृह व्यवस्था कहलाती है।

उपरोक्त परिभाषा संक्षिप्त, सरल व सही है किन्तु ~~महत्वपूर्ण~~ नहीं है। क्योंकि इसमें व्यवस्था प्रक्रिया के चरणों का उल्लेख नहीं है तथा इसमें कार्य को प्रेरित करने हेतु निर्णय प्रक्रिया सम्मिलित नहीं है। अतः यह परिभाषा अधूरी समझी जाती है। निम्नलिखित परिभाषा में प्रक्रिया के बारे में ~~...~~ विस्तृत वर्णन है।

ग्रास एवं केन्डल के अनुसार:— गृह प्रबन्ध निर्णयों की ऐसी श्रृंखला है जो पारिवारिक साधनों का पारिवारिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयोग करने की प्रक्रिया प्रस्तुत करती है। इस प्रक्रिया के कम से कम तीन चरण (पद) होते हैं ~~(i)~~

(i) आयोजन / नियोजन / योजना बनाना (Planning).
(ii) नियंत्रण (Controlling).
(iii) मूल्यांकन (Evaluation).

~~आय~~ नियंत्रण का मतलब आयोजन के विभिन्न तत्वों का नियंत्रण, चाहे वह स्वयं के द्वारा किया जाया हो या अन्य के द्वारा और मूल्यांकन का मतलब परिणामों का मूल्यांकन से है जो आगामी आयोजन के लिए मार्ग दर्शन होता है।

उपरोक्त परिभाषा में दो नई अवधारणाएँ हैं— गृह व्यवस्था एक मानसिक प्रक्रिया है और व्यवस्था प्रक्रिया में निश्चित क्रमोत्तर सोपान होते हैं।

(2) प्रो. निकेल तथा जे एम. डॉरसे के अनुसार :—

~~[illegible]~~ "गृह व्यवस्था परिवार के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से परिवार के स्रोतों या साधनों के प्रयोग हेतु किया जाने वाला आयोजन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन है।"

(Home Management is planning controlling and evaluating the use of the resources of the family for the purpose of attaining family goals.)

(3) डॉ. शौरी के अनुसार :— "गृह-व्यवस्था पारिवारिक जीवन का प्रशासनात्मक पक्ष है। यह गत्यात्मक है तथा इसमें कार्य को प्रेरित करने की प्रक्रिया सम्मिलित है और यथार्थ कार्य-संपादन का प्रभावी साधन यही है। किसी व्यक्ति अथवा परिवार की दृष्टि से गृह-व्यवस्था सुनियोजित क्रिया तथा जीवन है जिसमें मूल्यों का पोषण और आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है।"

(4) इरीन ऑपनहीम के अनुसार :— "गृह-व्यवस्था संस्कृति की जड़ होती है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में गृह उत्तरदायित्वों की व्यवस्था में भिन्नता होती है। स्वयं संस्कृति में भी पर्याप्त भिन्नता होती है।"

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि परिवार द्वारा निर्धारित किए गए पारिवारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु जो निर्णय लिए जाते हैं, उनके अनुसार प्राप्त साधनों द्वारा कार्य करना ही गृह-प्रबन्ध है।

अतः हम कह सकते हैं कि प्रबंध एक मानवीय प्रक्रिया है। इसका अर्थ किसी कार्य को निष्पादित करना या पूरा करना मात्र नहीं होता। गृह-प्रबंध अत्यंत सूक्ष्म एवं कुशलतापूर्वक बनाई जाने वाली योजना है जिसमें परिवार के सभी साधनों का उपयोग परिवार के सदस्यों की संतुष्टि और अधिकतम लाभ के लिए किया जाता है।